हिफाज़त

कुर्आन और हुज़ूर ﷺ की दुआओं के ज़रीये

INDEX

१ शैतान से हिफ़ाज़त की दुआ

सुबह के वक्त पढ़ें

أَعُوذُ بِاللهِ السَّمِيعِ الْعَلِيمِ

مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيمِ

अउज़ु बिल्लाहिस समीइल अलीमि मिनश शैतानिर रजीमि

[अमलुल यौम वल्लैला लिब्ने सुन्नी : ४९, अनस बिन मालिक رضي الله عنه]

तर्जमा : मैं शैतान मरदूद से अल्लाह की पनाह में आता हूँ, जो सुनने वाला और जानने वाला है।

फ़ज़ीलत/हदीस : रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : जो शख्स सुबह के वक्त यह दुआ पढ़ेगा तो शाम तक शैतान के शर से महफूज़ हो जाएगा।

२ किसी भी चीज़ के शर से हिफाज़त की दुआ

أَعُوْذُ بِكَلِمَاتِ اللهِ التَّامَّاتِ مِنْ شَرِّ مَا خَلَقَ

अऊज़ु बिकलिमातिल्लाहित ताम्माति मिन शर्रि मा खलक

[मुस्लिम : ७०५३, खौला बिनते हकीम رضي الله عنها]

तर्जमा : मैं अल्लाह तआला के मुकम्मल कलिमात की पनाह में आता हूँ तमाम मखलूक़ के शर से।

फज़ीलत/हदीस : रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : जो शख्स किसी भी जगह पर क़याम करे फिर यह दुआ पढ़े तो जब तक वहाँ ठहरा रहेगा कोई चीज़ उस को नुक़सान नहीं पहुंचाएगी।

३ नज़रे बद का इलाज

اَللّٰهُمَّ أَذْهِبْ حَرَّهَا وَبَرْدَهَا وَوَصَبَهَا

अल्लाहुम्म अज़्हिब हर्रहा व बरदहा व वसबहा

[अमलुल यौम वल्लैला लिन्नसई : १०३३, आमिर बिन रबीअह رضي الله عنه]

तर्जमा : ऐ अल्लाह ! नज़रे बद की गर्मी और उस की ठन्डक और उस की तकलीफ को दूर फर्मा।

फज़ीलत/हदीस : एक शख्स को नज़र लग गई थी तो आप ﷺ ने उस के सीने पर हाथ रख कर यह दुआ फर्माई।

४ किसी से खतरे या खौफ के वक़्त की दुआ

اَللّٰهُمَّ إِنَّا نَجْعَلُكَ فِيْ نُحُوْرِهِمْ وَنَعُوْذُ بِكَ

مِنْ شُرُوْرِهِمْ

अल्लाहुम्म इन्ना नजअलुक फी नुहूरिहिम व नऊज़ुबिक मिन शुरूरिहिम

[अबू दाऊद : १५३७, अब्दुल्लाह बिन अबी बर्दा رضي الله عنه]

तर्जमा : ऐ अल्लाह ! हम (अपनी हिफाज़त के लिये) आप को उन दुश्मनों के मुक़ाबल में पेश करते हैं और उन की बुराई से पनाह चाहते हैं।

फज़ीलत/हदीस : रसूलुल्लाह ﷺ जब किसी से खतरा महसूस करते, तो यह दुआ फर्माते।

५ ईमान पर साबित क़दमी की दुआ

يَا مُقَلِّبَ الْقُلُوْبِ ثَبِّتْ قَلْبِيْ عَلٰى دِيْنِكَ

या मुकल्लिबल कुलूबि सब्बित कल्बी अला दीनिक

[सुननुत तिर्मिज़ी : २१४०, अनस رضی اللہ عنہ]

तर्जमा : ऐ दिलों को फ़ेरने वाले ! मेरा दिल अपने दीन पर जमा दे।

फज़ीलत/हदीस : रसूलुल्लाह ﷺ कसरत से यह दुआ पढ़ा करते थे।

६ ग़म व परेशानी दूर करने के लिये

يَا حَيُّ يَا قَيُّومُ بِرَحْمَتِكَ أَسْتَغِيثُ

या हय्यु या कय्यूमु बिरह्मतिक अस्तगीसु

[तिर्मिज़ी : ३५२४, अनस बिन मालिक رضي الله عنه]

तर्जमा : ऐ हमेशा ज़िन्दा रहने वाले, सब को थामने वाले ! मैं तेरी रहमत की उम्मीद के साथ तुझ से फर्याद करता हूँ।

फ़ज़ीलत/हदीस : रसूलुल्लाह ﷺ को जब कोई ग़म या परेशानी लाहिक़ होती तो यह कहा करते।

७ जहन्नम से नजात पाने की दुआ

सुबह व शाम ७ मरतबा पढें

अल्लाहुम्म अजिरनी मिनन्नार

[अबू दाउद : ५७९]

तर्जमा : ए अल्लाह ! मुझे जहन्नम से नजात अता फरमाइये।

फज़ीलत : हज़रत मुस्लिम बिन हारिस तमीमी رضي الله عنه फरमाते हैं के रसूलुल्लाह ﷺ ने उन के साथ सरगोशी फरमाई और फरमाया के जब तुम मग्रिब की नमाज़ से फारिग हो जाओ तो ७ मरतबा यह दुआ पढो, अगर तुम यह दुआ पढ लोगे और उसी रात में तुम्हारी वफात हो जाए, तो तुम्हारे लिये जहन्नम से खलासी लिख दी जाएगी, और जब तुम फज्र की नमाज़ पढलो, तो यह दुआ पढ लिया करो, अगर तुम एसा कर लेते हो, और उस दिन तुम्हारा इंतिकाल हो जाता है, तो तुम्हारे लिये जहन्नम से छुटकारा लिख दिया जाएगा।

८ दुन्या व आखिरत की आफियत के लिये सब से बेहतरीन दुआ

اَللّٰهُمَّ إِنِّيْٓ أَسْئَلُكَ الْعَافِيَةَ وَالْمُعَافَاةَ

فِي الدُّنْيَا وَالْاٰخِرَةِ

अल्लाहुम्म इन्नी अस्अलुकल आफियत वल मुआफात, फि द्दुनया वल आखिरति,
[तिर्मिज़ी : ३५१२, अनस رضي الله عنه]

तर्जमा : ए अल्लाह में आप से दुन्या व आखिरत की आफियत तलब करता हूं।

फज़ीलत : एक शख्स ने हुज़ूर ﷺ की खिदमत में आकर अर्ज़ किया के ए अल्लाह के रसूल! सब से बेहतर दुआ कोन सी है। आप ﷺ ने दर्जे बाला दुआ मांगने की तलकीन फरमाई, दूसरे दिन भी उस ने आकर यही सवाल किया, आप ﷺ ने उसे यही दुआ बताई, जब तीसरे दिन आकर उस ने यही सवाल किया, तो आप ﷺ ने यही दुआ बताई और फरमाया: जब तुम्हें दुन्या व आखिरत की आफियत मिल गई तो तुम कामियाब हो गए।

९ बीमारी (नज़रे बद वगैरा) से हिफाज़त की दुआ

بِسْمِ اللّٰهِ أَرْقِيْكَ مِنْ كُلِّ شَيْءٍ يُؤْذِيْكَ مِنْ

شَرِّ كُلِّ نَفْسٍ أَوْ عَيْنٍ حَاسِدٍ اَللّٰهُ يَشْفِيْكَ

بِسْمِ اللّٰهِ أَرْقِيْكَ

बिस्मिल्लाहि अरकीक मिन कुल्लि शयइन युअज़ीक मिन शर्रि कुल्लि नफ्सिन अव अयनि हासिदिन, अल्लाहु यश्फीक, बिस्मिल्लाहि अरकीक

[मुस्लिम : ५८२९, अबू सईद رضي الله عنه]

तर्जमा : मैं अल्लाह का नाम ले कर तुझ पर दम करता हूँ, हर उस चीज़ से बचने के लिये जो तुझे तक़लीफ देती है और हर नफ्स के शर से और हर हासिद की आँख के शर से। अल्लाह तुझे शिफा दे, अल्लाह का नाम ले कर मैं तुझ पर दम करता हूँ।

फज़ीलत/हदीस : हज़रत जिब्रईल عَلَيْهِ السَّلَام नबी ﷺ के पास आए और अर्ज़ किया : ऐ मुहम्मद ﷺ ! आप बीमार हैं ? आप ﷺ ने फर्माया : जी हाँ ! तो जिब्रईल عَلَيْهِ السَّلَام ने यह दुआ दी।

⑩ ४ चीज़ों से बचने की दुआ

اَللّٰهُمَّ إِنِّيْ أَعُوْذُبِكَ مِنْ قَلْبٍ لَّا يَخْشَعُ

وَمِنْ دُعَاءٍ لَّا يُسْمَعُ وَمِنْ نَفْسٍ لَّا تَشْبَعُ

وَمِنْ عِلْمٍ لَّا يَنْفَعُ، أَعُوْذُبِكَ مِنْ

هٰؤُلَآءِ الْأَرْبَعِ

अल्लाहुम्म इन्नी अऊज़ु बिक मिन कल्बिल ला यखशउ व मिन दुआइल ला युस्मउ व मिन नफ्सिल ला तश्बउ व मिन इल्मिल ला यनफउ अऊज़ु बिक मिन हा उलाइल अर्बइ

[तिर्मिज़ी: ३४८२, अब्दुल्लाह बिन अम्र رضی اللہ عنہما]

तर्जमा : ऐ अल्लाह ! मैं न डरने वाले दिल, कुबूल न होने वाली दुआ, सैर न होने वाले नफ्स और नफा न पहुंचाने वाले इल्म से तेरी पनाह चाहता हूँ, ऐ अल्लाह! मैं इन चारों चीज़ों से तेरी पनाह लेता हूँ।

फज़ीलत / हदीस : रसूलुल्लाह ﷺ यह दुआ फर्माते थे।

११ जादू से हिफाज़त का नुस्खा

أَعُوْذُ بِوَجْهِ اللّٰهِ الْعَظِيْمِ الَّذِيْ لَيْسَ شَيْءٌ
أَعْظَمَ مِنْهُ وَبِكَلِمَاتِ اللّٰهِ التَّامَّاتِ الَّتِيْ
لَا يُجَاوِزُهُنَّ بَرٌّ وَّلَا فَاجِرٌ وَّبِأَسْمَآءِ اللّٰهِ
الْحُسْنٰى كُلِّهَا مَا عَلِمْتُ مِنْهَا وَمَا لَمْ أَعْلَمْ
مِنْ شَرِّ مَا خَلَقَ وَبَرَأَ وَذَرَأَ

**अऊज़ु बि वजहिल्लाहिल अज़ीमिल लज़ी
लयस शयउन अअ्ज़म मिन्हु
व बिकलिमातिल लाहित ताम्मातिल लाती
ला युजाविज़ुहुन्न बर्रुंव्वला फाजिरुंव्व
बिअस्माइल्लाहिल हुस्ना कुल्लिहा मा
अलिम्तु मिन्हा व मा लम अअ्लम मिन शर्रि
मा खलक व बरअ व ज़रअ**

[मोअत्ता इमाम मालिक : ३५०२, कअब अहबार رضي الله عنه]

तर्जमा : मैं अल्लाह की उस अज़ीम ज़ात की पनाह माँगता हूँ के जिस से कोई चीज़ बड़ी नहीं है और (पनाह माँगता हूँ) अल्लाह के उन कलिमात की जिन से आगे नहीं बढ़ता है कोई नेक और कोई बुरा शख्स, और (पनाह माँगता हूँ) अल्लाह के तमाम नामों की जो मुझे मालूम है और जो मुझे मालूम नहीं है, उन तमाम चीज़ों की बुराई से जो उस ने पैदा की और ठीक बनाई और फ़ैलाई।

फज़ीलत/हदीस : हज़रत कअब अहबार رضي الله عنه फर्माते हैं के अगर मैं यह दुआ न पढ़ता तो यहूद जादू के ज़ोर से मुझे गधा बना देते।

१२ मुसीबतों से नजात हासिल करने का नबवी नुस्खा

सुबह व शाम पढ़ें

اَللّٰهُمَّ أَنْتَ رَبِّيْ لَآ إِلٰهَ إِلَّا أَنْتَ عَلَيْكَ تَوَكَّلْتُ

وَأَنْتَ رَبُّ الْعَرْشِ الْعَظِيْمِ مَا شَآءَ اللّٰهُ كَانَ وَمَا لَمْ

يَشَأْ لَمْ يَكُنْ وَلَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ إِلَّا بِاللّٰهِ الْعَلِيِّ

الْعَظِيْمِ أَعْلَمُ أَنَّ اللّٰهَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ

وَّأَنَّ اللّٰهَ قَدْ أَحَاطَ بِكُلِّ شَيْءٍ عِلْمًا اَللّٰهُمَّ إِنِّيْ

أَعُوْذُ بِكَ مِنْ شَرِّ نَفْسِيْ وَمِنْ شَرِّ كُلِّ دَابَّةٍ

أَنْتَ اٰخِذٌۢ بِنَاصِيَتِهَا إِنَّ رَبِّيْ عَلٰى صِرَاطٍ

مُّسْتَقِيْمٍ

अल्लाहुम्म अन्त रब्बी ला इलाह इल्ला अन्त अलैक तवक्कल्तु व अन्त रब्बुल अर्शिल अज़ीम मा शाअल्लाहु कान व मा लम यशअ लम यकुन व ला हौल व ला कुव्वत इल्ला बिल्लाहिल अलिय्यिल अज़ीमि अअ्लमु अन्नल लाह अलाकुल्लि शयइन कदीरुंव्व व अन्नल्लाह कद अहात बिकुल्लि शयइन इल्मन अल्लाहुम्म इन्नी अउज़ु बिक मिन शर्रि नफ्सी व मिन शर्रि कुल्लि दाब्बतिन अन्त आखिज़ुन बिना सियतिहा इन्न रब्बी अला सिरातिम मुस्तकीम

[इब्ने सुन्नी : ५७, अबू दर्दा رضي الله عنه]

तर्जमा : ऐ अल्लाह ! आप ही मेरे पालने वाले हैं, आप के सिवा कोई इबादत के लाइक नहीं है, आप ही पर मैं ने भरोसा किया और आप ही अज़ीम अर्श के मालिक हैं, जो कुछ अल्लाह ने चाहा वह हुआ और जो

अल्लाह ने नहीं चाहा वह नहीं हुआ और गुनाहों से बचने और नेक कामों के करने की ताकत अल्लाह की मदद ही से मिलती है जो बुलन्दी वाला, अज़मत वाला है, मैं यक़ीन करता हूँ के अल्लाह तआला हर चीज़ पर पूरी कुदरत रखने वाला है और यह के अल्लाह तआला का इल्म हर चीज़ को घेरे हुए है। ऐ अल्लाह ! मैं आप की पनाह माँगता हूँ, मेरे नफ्स की बुराई से और हर उस जानवर की बुराई से जिस की पेशानी आप के क़बज़े में है, बे शक़ मेरा रब सीधे रास्ते पर है।

फज़ीलत/हदीस : हज़रत अबू दर्दा رضي الله عنه फर्माते हैं के मैं ने रसूलुल्लाह ﷺ को फर्माते हुए सुना के जो शख्स इन कलिमात को सुबह पढ़े तो शाम तक कोई मुसीबत नहीं पहुंचेगी। और शाम को पढ़ ले तो सुबह तक कोई मुसीबत नहीं पहुंचेगी।

⑬ हर किस्म की आफियत का नबवी नुस्खा

सुबह व शाम पढ़ें

اَللّٰهُمَّ إِنِّيْ أَسْئَلُكَ الْعَفْوَ وَالْعَافِيَةَ فِي الدُّنْيَا وَالْاٰخِرَةِ،

اَللّٰهُمَّ إِنِّيْ أَسْئَلُكَ الْعَفْوَ وَالْعَافِيَةَ فِيْ دِيْنِيْ

وَدُنْيَايَ وَأَهْلِيْ وَمَالِيْ، اَللّٰهُمَّ اسْتُرْ عَوْرَاتِيْ

وَاٰمِنْ رَوْعَاتِيْ، اَللّٰهُمَّ احْفَظْنِيْ مِنْ بَيْنِ

يَدَيَّ وَمِنْ خَلْفِيْ وَعَنْ يَّمِيْنِيْ وَعَنْ شِمَالِيْ وَمِنْ

فَوْقِيْ وَأَعُوْذُ بِعَظْمَتِكَ أَنْ أُغْتَالَ مِنْ تَحْتِيْ

अल्लाहुम्म इन्नी अस्अलुकल अफ्व वल आफियत फिद्दुनया वल आखिरति, अल्लाहुम्म इन्नी अस्अलुकल अफ्व वल आफियत फी दीनी व दुनयाय व अह्ली व माली,

अल्लाहुम्मस्तुर औराती व आमिन रौआती, अल्लाहुम्मह फज़नी मिम बैनि यदय्य व मिन खल्फी व अैंय यमीनी वअन शिमाली व मिन फौकी व अउज़ु बिअज़मतिक अन उग्ताल मिन तह्ती

[अबू दाऊद : ५०७४, इब्ने उमर ﷺ]

तर्जमा : ऐ अल्लाह ! मैं आप से आफियत माँगता हूँ, दुनिया और आखिरत में, ऐ अल्लाह ! मैं आप से माफी और सलामती माँगता हूँ मेरे दीन पर मेरी दुनिया में और मेरे घर वालों में और मेरे माल में, ऐ अल्लाह! ढाँप ले मेरे ऐबों को और खौफ की चीजों से मुझे अमान दे। ऐ अल्लाह ! मेरी हिफाज़त कर मेरे आगे से और मेरे पीछे से और मेरे दाएं से और मेरे बाएं से और मेरे ऊपर से। और मैं आप की अज़मत की पनाह लेता हूँ इस से के हलाक किया जाऊँ मेरे नीचे से।

फज़ीलत/हदीस : हज़ूर ﷺ हमेशा सुबह व शाम यह दुआ पढ़ा करते थे।

⑭ बदन की सलामती की दुआ

सुबह व शाम ३ मर्तबा पढ़ें

اَللّٰهُمَّ عَافِنِيْ فِيْ بَدَنِيْ، اَللّٰهُمَّ عَافِنِيْ فِيْ سَمْعِيْ،

اَللّٰهُمَّ عَافِنِيْ فِيْ بَصَرِيْ، لَآ إِلٰهَ إِلَّآ أَنْتَ

अल्लाहुम्म आफिनी फी बदनी, अल्लाहुम्म आफिनी फी सम्ई, अल्लाहुम्म आफिनी फी बसरी, ला इलाह इल्ला अन्त

[अबू दाऊद : ५०९०, अबू बकरह رضي الله عنه]

तर्जमा : ऐ अल्लाह ! मेरे बदन को दुरुस्त रखिये, ऐ अल्लाह ! मेरे कान आफियत से रखिये, ऐ अल्लाह ! मेरी आँखें आफियत से रखिये, आप के सिवा कोई इबादत के लाइक नहीं।

फज़ीलत/हदीस : रसूलुल्लाह ﷺ रोज़ाना सुबह व शाम के वक़्त यह दुआ तीन तीन बार पढ़ा करते थे।

⑮ नुक़सान से बचने की दुआ

सुबह व शाम ३ मर्तबा पढ़ें

بِسْمِ اللهِ الَّذِي لَا يَضُرُّ مَعَ اسْمِهِ شَيْءٌ فِي الْأَرْضِ
وَلَا فِي السَّمَاءِ وَهُوَ السَّمِيعُ الْعَلِيمُ

बिस्मिल्लाहिल लज़ी ला यज़ुर्रु मअस्मिही शयउन फिल अर्ज़ि वला फिस समाइ व हुवस्समीउल अलीम

[तिर्मिज़ी : ३३८८, उसमान बिन अफ्फान رضي الله عنه]

तर्जमा : अल्लाह के नाम के साथ मैं ने सुबह की जिस के नाम की बरकत से कोई चीज़ नुक़सान नहीं पहुंचाती, ज़मीन में और न आसमान में और वही खूब सुनने वाला, बड़ा जानने वाला है।

फज़ीलत/हदीस : रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : जो शख्स सुबह व शाम तीन मर्तबा यह दुआ पढ़ लिया करे, उसे कोई चीज़ नुक़सान नहीं पहुंचा सकती।

⑯ तमाम ज़रूरतों का हल

सुबह व शाम ७ मर्तबा पढ़ें

حَسْبِيَ اللّٰهُ لَآ إِلٰهَ إِلَّا هُوَ عَلَيْهِ تَوَكَّلْتُ

وَهُوَ رَبُّ الْعَرْشِ الْعَظِيْمِ

हस्बियल लाहु ला इलाह इल्ला हुव
अलयहि तवक्कल्तु
व हुव रब्बुल अर्शिल अज़ीम

[अबू दाऊद : ५०८१, अबू दर्दा رضي الله عنه]

तर्जमा : मेरे लिये अल्लाह तआला काफी है जिस के अलावा कोई माबूद नहीं, उस पर मैं ने भरोसा किया और वह अर्शे अज़ीम का रब है।

फ़ज़ीलत/हदीस : हज़रत अबू दर्दा رضي الله عنه फर्माते हैं के जो शख्स सुबह व शाम सात मर्तबा यह दुआ यक़ीन के साथ या बग़ैर यक़ीन के पढ़ ले तो अल्लाह तआला उस के हर अहम मसले की कफालत फर्माएंगे।

१७ शैतान के असरात से हिफाज़त, और भी कई फवाइद

१० मर्तबा सुबह और १० मर्तबा शाम में पढ़ें

لَآ إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ ، لَهُ الْمُلْكُ

وَلَهُ الْحَمْدُ وَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ

ला इलाह इल्लल्लाहु वहदहु ला शरीक लहू, लहुल मुल्कु व लहुल हम्दु व हुव अला कुल्लि शयइन कदीर

[मुस्नदे अहमद : ८७१९, अबू हुरैरह رضي الله عنه]

फज़ीलत/हदीस : जो शख्स सुबह यह कलिमात दस मर्तबा पढ़े तो उस के लिये सौ नेकियाँ लिखी जाएँगी, और सौ गुनाह माफ किये जाएँगे और उस के लिये एक गुलाम आज़ाद करने के बराबर सवाब होगा। और शाम तक हिफाज़त में रहेगा और जिस ने शाम को पढ़ा तो सुबह तक उस के लिये ऐसा ही होता है।

१८ आसेब और सहर वगेराह से हिफ़ाज़त का नबवी नुस्खा

शाम में ३ मर्तबा पढ़ें

أَمْسَيْنَا وَأَمْسَى الْمُلْكُ لِلّٰهِ وَالْحَمْدُ كُلُّهُ لِلّٰهِ

أَعُوْذُ بِاللّٰهِ الَّذِيْ يُمْسِكُ السَّمَاءَ أَنْ تَقَعَ عَلَى

الْأَرْضِ إِلَّا بِإِذْنِهِ مِنْ شَرِّ مَا خَلَقَ وَذَرَأَ وَمِنْ

شَرِّ الشَّيْطَانِ وَشِرْكِهِ

अम्सयना व अम्सल मुल्कु लिल्लाहि वल्हम्दु कुल्लुहू लिल्लाहि अऊज़ु बिल्लाहिल्लज़ी युम्सिकु स्समाअ अन तकअ अलल अर्ज़ि इल्ला बिइज़निहि मिन शर्रि मा खलक व ज़रअ व मिन शर्रिश्शैतानि व शिर्किहि

[अमलुल यौम वल्लैला लिब्ने सुन्नी : ६७]

तर्जमा : अल्लाह के लिये हम ने और पूरी सलतनत ने शाम की, तमाम तारीफ अल्लाह के लिये हैं, मैं पनाह

लेता हूँ अल्लाह की, जिस ने आसमान को ज़मीन पर गिरने से रोके रखा है, मखलूक़ की बुराई से और उस बुराई से जो फ़ैली है और शैतान के शर से और उस के शिर्क से।

फ़ज़ीलत / हदीस : रसूलुल्लाह ﷺ ने अब्दुल्लाह बिन अम्र बिन आस رضي الله عنهما से फर्माया : बड़ा अच्छा होता के शाम के वक्त इस दुआ को तीन मर्तबा पढ़ लेते।

⑲ सगीरा गुनाहों से माफी की दुआ

سُبْحَانَ اللّٰهِ وَبِحَمْدِهٖ

सुब्हानल्लाही वबिहमदिही

[बुखारी : ६४०५, अबू हुरैरह رضي الله عنه]

तर्जमा : अल्लाह की ज़ात तमाम उयूबों से पाक है और तारीफ उसी के लिये है।

फ़ज़ीलत/हदीस : रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : जिस ने रोज़ाना १०० मरतबा यह दुआ पढी उस के (सगीरा) गुनाह माफ कर दिये जाएंगे, अगरचे कसरत में समंदर के झाग के बराबर हों।

२० हर फर्ज़ नमाज़ के बाद पढ़ें

फज़ीलत/हदीस : रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया :जो शख्स हर फर्ज़ नमाज़ के बाद

३३ मर्तबा

سُبْحَانَ اللهِ

सुब्हानल्लाह

३३ मर्तबा

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ

अल्हम्दुलिल्लाह

और ३४ मर्तबा

اَللّٰهُ أَكْبَرُ

अल्लाहु अक्बर

पढ़ता है वह कभी नुकसान में नहीं रहता।

[मुस्लिम : १३७७, कअब बिन उजरह رضي الله عنه]

بِسۡمِ اللّٰهِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِيۡمِ ﴿۱﴾

اَلۡحَمۡدُ لِلّٰهِ رَبِّ الۡعٰلَمِيۡنَۙ ﴿۲﴾ الرَّحۡمٰنِ

الرَّحِيۡمِۙ ﴿۳﴾ مٰلِكِ يَوۡمِ الدِّيۡنِؕ ﴿۴﴾ اِيَّاكَ

نَعۡبُدُ وَاِيَّاكَ نَسۡتَعِيۡنُؕ ﴿۵﴾ اِهۡدِنَا

الصِّرَاطَ الۡمُسۡتَقِيۡمَۙ ﴿۶﴾ صِرَاطَ الَّذِيۡنَ

اَنۡعَمۡتَ عَلَيۡهِمۡ ۙۙ غَيۡرِ الۡمَغۡضُوۡبِ عَلَيۡهِمۡ

وَلَا الضَّآلِّيۡنَ ﴿۷﴾ ع

بِسۡمِ اللّٰهِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِيۡمِ ﴿﴾

الٓمّٓ ﴿۱﴾ ذٰلِكَ الۡكِتٰبُ لَا رَيۡبَ ۛۚ فِيۡهِ ۛۚ

هُدًى لِّلۡمُتَّقِيۡنَۙ ﴿۲﴾ الَّذِيۡنَ يُؤۡمِنُوۡنَ

بِالۡغَيۡبِ وَ يُقِيۡمُوۡنَ الصَّلٰوةَ وَ مِمَّا رَزَقۡنٰهُمۡ

يُنْفِقُوْنَ ۙ﴿۳﴾ وَالَّذِيْنَ يُؤْمِنُوْنَ بِمَآ اُنْزِلَ

اِلَيْكَ وَمَآ اُنْزِلَ مِنْ قَبْلِكَ ۚ وَبِالْاٰخِرَةِ

هُمْ يُوْقِنُوْنَ ؕ﴿۴﴾ اُولٰٓئِكَ عَلٰى هُدًى مِّنْ

رَّبِّهِمْ ۗ وَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُوْنَ ﴿۵﴾

وَاِلٰـهُكُمْ اِلٰهٌ وَّاحِدٌ ۚ لَآ اِلٰهَ اِلَّا

هُوَ الرَّحْمٰنُ الرَّحِيْمُ ﴿۱۶۳﴾ ع

اَللّٰهُ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ۚ اَلْحَيُّ الْقَيُّوْمُ ۬ۚ

لَا تَاْخُذُهٗ سِنَةٌ وَّلَا نَوْمٌ ؕ لَهٗ مَا فِى السَّمٰوٰتِ

وَمَا فِى الْاَرْضِ ؕ مَنْ ذَا الَّذِىْ يَشْفَعُ

عِنْدَهٗٓ اِلَّا بِاِذْنِهٖ ؕ يَعْلَمُ مَا بَيْنَ اَيْدِيْهِمْ

وَمَا خَلْفَهُمْ ۚ وَلَا يُحِيْطُوْنَ بِشَىْءٍ مِّنْ

عِلْمِهٖٓ اِلَّا بِمَا شَآءَ ۚ وَسِعَ كُرْسِيُّهُ

السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ ۚ وَلَا يَـُٔوْدُهٗ حِفْظُهُمَا ۚ

وَهُوَ الْعَلِيُّ الْعَظِيْمُ ﴿٢٥٥﴾ لَآ اِكْرَاهَ فِي الدِّيْنِ ۙ قف

قَدْ تَّبَيَّنَ الرُّشْدُ مِنَ الْغَيِّ ۚ فَمَنْ يَّكْفُرْ

بِالطَّاغُوْتِ وَيُؤْمِنْۢ بِاللّٰهِ فَقَدِ اسْتَمْسَكَ

بِالْعُرْوَةِ الْوُثْقٰى ۗ لَا انْفِصَامَ لَهَا ۭ وَاللّٰهُ

سَمِيْعٌ عَلِيْمٌ ﴿٢٥٦﴾ اَللّٰهُ وَلِيُّ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا ۙ

يُخْرِجُهُمْ مِّنَ الظُّلُمٰتِ اِلَى النُّوْرِ ڛ وَالَّذِيْنَ

كَفَرُوْٓا اَوْلِيٰۗـــُٔهُمُ الطَّاغُوْتُ ۙ يُخْرِجُوْنَهُمْ

مِّنَ النُّوْرِ اِلَى الظُّلُمٰتِ ۭ اُولٰۗىِٕكَ اَصْحٰبُ

النَّارِ ۚ هُمْ فِيْهَا خٰلِدُوْنَ ﴿٢٥٧﴾ ع

لِلّٰهِ مَا فِى السَّمٰوٰتِ وَمَا فِى الْاَرْضِ ؕ وَاِنْ

تُبْدُوْا مَا فِىْۤ اَنْفُسِكُمْ اَوْ تُخْفُوْهُ يُحَاسِبْكُمْ

بِهِ اللّٰهُ ؕ فَيَغْفِرُ لِمَنْ يَّشَآءُ وَيُعَذِّبُ

مَنْ يَّشَآءُ ؕ وَاللّٰهُ عَلٰى كُلِّ شَىْءٍ قَدِيْرٌ ﴿۲۸۴﴾

اٰمَنَ الرَّسُوْلُ بِمَاۤ اُنْزِلَ اِلَيْهِ مِنْ رَّبِّهٖ

وَالْمُؤْمِنُوْنَ ؕ كُلٌّ اٰمَنَ بِاللّٰهِ وَمَلٰۤئِكَتِهٖ

وَكُتُبِهٖ وَرُسُلِهٖ ۟ قف لَا نُفَرِّقُ بَيْنَ اَحَدٍ

مِّنْ رُّسُلِهٖ ۟ قف وَقَالُوْا سَمِعْنَا وَاَطَعْنَا ۗ

غُفْرَانَكَ رَبَّنَا وَاِلَيْكَ الْمَصِيْرُ ﴿۲۸۵﴾

لَا يُكَلِّفُ اللّٰهُ نَفْسًا اِلَّا وُسْعَهَا ؕ لَهَا

مَا كَسَبَتْ وَعَلَيْهَا مَا اكْتَسَبَتْ ؕ رَبَّنَا

لَا تُؤَاخِذْنَآ اِنْ نَّسِيْنَآ اَوْ اَخْطَاْنَا ۚ رَبَّنَا

وَلَا تَحْمِلْ عَلَيْنَآ اِصْرًا كَمَا حَمَلْتَهٗ عَلَى الَّذِيْنَ

مِنْ قَبْلِنَا ۚ رَبَّنَا وَلَا تُحَمِّلْنَا مَا لَا طَاقَةَ

لَنَا بِهٖ ۚ وَاعْفُ عَنَّا وقفة وَاغْفِرْ لَنَا وقفة وَارْحَمْنَا وقفة

اَنْتَ مَوْلٰىنَا فَانْصُرْنَا عَلَى الْقَوْمِ الْكٰفِرِيْنَ ﴿٢٨٦﴾ ع

شَهِدَ اللّٰهُ اَنَّهٗ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ۙ وَالْمَلٰٓئِكَةُ

وَاُولُوا الْعِلْمِ قَآئِمًا ۢ بِالْقِسْطِ ؕ لَآ اِلٰهَ اِلَّا

هُوَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ؕ ﴿١٨﴾

قُلِ اللّٰهُمَّ مٰلِكَ الْمُلْكِ تُؤْتِي الْمُلْكَ مَنْ

تَشَآءُ وَتَنْزِعُ الْمُلْكَ مِمَّنْ تَشَآءُ ۫ وَتُعِزُّ

مَنْ تَشَآءُ وَتُذِلُّ مَنْ تَشَآءُ ؕ بِيَدِكَ الْخَيْرُ ؕ

اِنَّكَ عَلٰى كُلِّ شَیْءٍ قَدِیْرٌ ﴿٢٦﴾ تُوْلِجُ الَّیْلَ

فِی النَّهَارِ وَ تُوْلِجُ النَّهَارَ فِی الَّیْلِ٘ وَ تُخْرِجُ

الْحَیَّ مِنَ الْمَیِّتِ وَ تُخْرِجُ الْمَیِّتَ مِنَ الْحَیِّ٘

وَ تَرْزُقُ مَنْ تَشَآءُ بِغَیْرِ حِسَابٍ ﴿٢٧﴾

اِنَّ رَبَّكُمُ اللّٰهُ الَّذِیْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضَ

فِیْ سِتَّةِ اَیَّامٍ ثُمَّ اسْتَوٰى عَلَى الْعَرْشِ قف یُغْشِی

الَّیْلَ النَّهَارَ یَطْلُبُهٗ حَثِیْثًا لا وَّ الشَّمْسَ وَ الْقَمَرَ

وَ النُّجُوْمَ مُسَخَّرٰتٍۭ بِاَمْرِهٖ ط اَلَا لَهُ الْخَلْقُ

وَ الْاَمْرُ ط تَبٰرَكَ اللّٰهُ رَبُّ الْعٰلَمِیْنَ ﴿٥٤﴾

اُدْعُوْا رَبَّكُمْ تَضَرُّعًا وَّ خُفْیَةً ط اِنَّهٗ لَا یُحِبُّ

الْمُعْتَدِیْنَ ﴿٥٥﴾ ج وَ لَا تُفْسِدُوْا فِی الْاَرْضِ

بَعْدَ اِصْلَاحِهَا وَادْعُوْهُ خَوْفًا وَّطَمَعًا ؕ اِنَّ

رَحْمَتَ اللّٰهِ قَرِيْبٌ مِّنَ الْمُحْسِنِيْنَ ﴿۵۶﴾

قُلِ ادْعُوا اللّٰهَ اَوِ ادْعُوا الرَّحْمٰنَ ؕ اَيًّا مَّا تَدْعُوْا

فَلَهُ الْاَسْمَآءُ الْحُسْنٰى ۚ وَلَا تَجْهَرْ بِصَلَاتِكَ

وَلَا تُخَافِتْ بِهَا وَابْتَغِ بَيْنَ ذٰلِكَ سَبِيْلًا ﴿۱۱۰﴾

وَقُلِ الْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِىْ لَمْ يَتَّخِذْ وَلَدًا وَّلَمْ

يَكُنْ لَّهٗ شَرِيْكٌ فِى الْمُلْكِ وَلَمْ يَكُنْ لَّهٗ

وَلِىٌّ مِّنَ الذُّلِّ وَكَبِّرْهُ تَكْبِيْرًا ﴿۱۱۱﴾

اَفَحَسِبْتُمْ اَنَّمَا خَلَقْنٰكُمْ عَبَثًا وَّاَنَّكُمْ اِلَيْنَا

لَا تُرْجَعُوْنَ ﴿۱۱۵﴾ فَتَعٰلَى اللّٰهُ الْمَلِكُ الْحَقُّ ۚ

لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ۚ رَبُّ الْعَرْشِ الْكَرِيْمِ ﴿۱۱۶﴾

وَمَنۡ يَّدۡعُ مَعَ اللّٰهِ اِلٰهًا اٰخَرَ ۙ لَا بُرۡهَانَ

لَهٗ بِهٖ ۙ فَاِنَّمَا حِسَابُهٗ عِنۡدَ رَبِّهٖ ؕ اِنَّهٗ

لَا يُفۡلِحُ الۡكٰفِرُوۡنَ ﴿۱۱۷﴾ وَقُلْ رَّبِّ اغۡفِرۡ

وَارۡحَمۡ وَاَنۡتَ خَيۡرُ الرّٰحِمِيۡنَ ﴿۱۱۸﴾ ع

بِسۡمِ اللّٰهِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِيۡمِ

وَالصّٰٓفّٰتِ صَفًّا ۙ﴿۱﴾ فَالزّٰجِرٰتِ زَجۡرًا ۙ﴿۲﴾

فَالتّٰلِيٰتِ ذِكۡرًا ۙ﴿۳﴾ اِنَّ اِلٰهَكُمۡ لَوَاحِدٌ ؕ﴿۴﴾

رَبُّ السَّمٰوٰتِ وَالۡاَرۡضِ وَمَا بَيۡنَهُمَا وَرَبُّ

الۡمَشَارِقِ ؕ﴿۵﴾ اِنَّا زَيَّنَّا السَّمَآءَ الدُّنۡيَا بِزِيۡنَةِ ۨ

الۡكَوَاكِبِ ۙ﴿۶﴾ وَحِفۡظًا مِّنۡ كُلِّ شَيۡطٰنٍ مَّارِدٍ ۚ﴿۷﴾

لَا يَسَّمَّعُوۡنَ اِلَى الۡمَلَاِ الۡاَعۡلٰى وَيُقۡذَفُوۡنَ

مِنْ كُلِّ جَانِبٍ ۝٨ قصلے دُحُوْرًا وَّلَهُمْ عَذَابٌ

وَّاصِبٌ ۝٩ لا اِلَّا مَنْ خَطِفَ الْخَطْفَةَ فَاَتْبَعَهٗ

شِهَابٌ ثَاقِبٌ ۝١٠ فَاسْتَفْتِهِمْ اَهُمْ اَشَدُّ خَلْقًا

اَمْ مَّنْ خَلَقْنَا ؕ اِنَّا خَلَقْنٰهُمْ مِّنْ طِيْنٍ لَّازِبٍ ۝١١

يٰمَعْشَرَ الْجِنِّ وَالْاِنْسِ اِنِ اسْتَطَعْتُمْ

اَنْ تَنْفُذُوْا مِنْ اَقْطَارِ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ

فَانْفُذُوْا ؕ لَا تَنْفُذُوْنَ اِلَّا بِسُلْطٰنٍ ۝٣٣ ج

فَبِاَيِّ اٰلَاۤءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ۝٣٤ يُرْسَلُ عَلَيْكُمَا

شُوَاظٌ مِّنْ نَّارٍ ۙ۬ وَّنُحَاسٌ فَلَا تَنْتَصِرٰنِ ۝٣٥ ج

فَبِاَيِّ اٰلَاۤءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ۝٣٦ فَاِذَا

انْشَقَّتِ السَّمَاۤءُ فَكَانَتْ وَرْدَةً كَالدِّهَانِ ۝٣٧ ج

فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿٣٨﴾ فَيَوْمَئِذٍ

لَّا يُسْـَٔلُ عَنْ ذَنْۢبِهٖٓ اِنْسٌ وَّلَا جَآنٌّ ۚ ﴿٣٩﴾

فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿٤٠﴾

لَوْ اَنْزَلْنَا هٰذَا الْقُرْاٰنَ عَلٰى جَبَلٍ لَّرَاَيْتَهٗ خَاشِعًا

مُّتَصَدِّعًا مِّنْ خَشْيَةِ اللّٰهِ ؕ وَتِلْكَ الْاَمْثَالُ

نَضْرِبُهَا لِلنَّاسِ لَعَلَّهُمْ يَتَفَكَّرُوْنَ ﴿٢١﴾

هُوَ اللّٰهُ الَّذِيْ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ۚ عٰلِمُ الْغَيْبِ

وَالشَّهَادَةِ ۚ هُوَ الرَّحْمٰنُ الرَّحِيْمُ ﴿٢٢﴾

هُوَ اللّٰهُ الَّذِيْ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ۚ اَلْمَلِكُ

الْقُدُّوْسُ السَّلٰمُ الْمُؤْمِنُ الْمُهَيْمِنُ الْعَزِيْزُ

الْجَبَّارُ الْمُتَكَبِّرُ ؕ سُبْحٰنَ اللّٰهِ عَمَّا

يُشْرِكُوْنَ ﴿٢٣﴾ هُوَ اللّٰهُ الْخَالِقُ الْبَارِئُ
الْمُصَوِّرُ لَهُ الْاَسْمَآءُ الْحُسْنٰى ؕ يُسَبِّحُ لَهٗ
مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۚ وَهُوَ الْعَزِيْزُ
الْحَكِيْمُ ﴿٢٤﴾ ع

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

قُلْ اُوْحِيَ اِلَيَّ اَنَّهُ اسْتَمَعَ نَفَرٌ مِّنَ الْجِنِّ
فَقَالُوْٓا اِنَّا سَمِعْنَا قُرْاٰنًا عَجَبًا ﴿١﴾ لا يَّهْدِيْٓ
اِلَى الرُّشْدِ فَاٰمَنَّا بِهٖ ؕ وَلَنْ نُّشْرِكَ بِرَبِّنَآ
اَحَدًا ﴿٢﴾ لا وَّاَنَّهٗ تَعٰلٰى جَدُّ رَبِّنَا مَا اتَّخَذَ
صَاحِبَةً وَّلَا وَلَدًا ﴿٣﴾ لا وَّاَنَّهٗ كَانَ يَقُوْلُ
سَفِيْهُنَا عَلَى اللّٰهِ شَطَطًا ﴿٤﴾ لا

قُلْ يٰٓاَيُّهَا الْكٰفِرُوْنَ ۝١ لَآ اَعْبُدُ مَا
تَعْبُدُوْنَ ۝٢ وَلَآ اَنْتُمْ عٰبِدُوْنَ مَآ اَعْبُدُ ۝٣
وَلَآ اَنَا عَابِدٌ مَّا عَبَدْتُّمْ ۝٤ وَلَآ اَنْتُمْ
عٰبِدُوْنَ مَآ اَعْبُدُ ۝٥ لَكُمْ دِيْنُكُمْ وَلِيَ دِيْنِ ۝٦

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۝

قُلْ هُوَ اللّٰهُ اَحَدٌ ۝١ اَللّٰهُ الصَّمَدُ ۝٢
لَمْ يَلِدْ ۙ وَلَمْ يُوْلَدْ ۝٣ وَلَمْ يَكُنْ لَّهٗ
كُفُوًا اَحَدٌ ۝٤

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۝

قُلْ اَعُوْذُ بِرَبِّ الْفَلَقِ ۝١ مِنْ شَرِّ مَا

خَلَقَ ۙ ۝٢ وَمِنْ شَرِّ غَاسِقٍ اِذَا وَقَبَ ۙ ۝٣

وَ مِنْ شَرِّ النَّفّٰثٰتِ فِي الْعُقَدِ ۙ ۝٤ وَ مِنْ

شَرِّ حَاسِدٍ اِذَا حَسَدَ ۝٥

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۝

قُلْ اَعُوْذُ بِرَبِّ النَّاسِ ۙ ۝١ مَلِكِ

النَّاسِ ۙ ۝٢ اِلٰهِ النَّاسِ ۙ ۝٣ مِنْ شَرِّ

الْوَسْوَاسِ ۙ الْخَنَّاسِ ۖ ۝٤ الَّذِىْ

يُوَسْوِسُ فِيْ صُدُوْرِ النَّاسِ ۙ ۝٥

مِنَ الْجِنَّةِ وَالنَّاسِ ۝٦

२२ नुक़सान से हिफाज़त (इस्तिखारा की दुआ)

फज़ीलत/हदीस : रसूलुल्लाह ﷺ फर्माते हैं के जिस ने इस्तिखारा कर लिया करे वह कभी नुक़सान नहीं उठाएगा। [तब्रानी औसत : ६६२७, अनस बिन मालिक رضي الله عنه]

अल्लाह के फेसले पर राज़ी रहना इंसान की नेक बख्ती की अलामत है, और इस्तिखारा न करना बद किसमती है। [तिर्मिज़ी : २१५१, सअद رضي الله عنه]

रसूलुल्लाह ﷺ इस्तिखारा इस तरह सिखाते थे, जैसे कुर्आन की सूरतें सिखाते। आप ﷺ फर्माते हैं जब कोई अहम काम हो तो दो रकात इस्तिखारा की निय्यत से नफ्ल नमाज़ पढ़ने के बाद इस्तिखारा की यह दुआ पढ़ें। [बुखारी : ६३८२, जाबिर رضي الله عنه]

नोट : लफ्ज़ هٰذَا الْأَمْرَ दो जगह आया है यहाँ पहुंचे तो अपने उस काम का नाम लें या दिल में उस काम का खयाल करें जिस के बारे में इस्तिखारा किया है।

इस्तिखारा का जवाब : ख्वाब में उस चीज़ को देख ले या दिल में कोई बात जम जाए या जिस चीज़ के लिये इस्तिखारा किया गया है उस के लिये रास्ता आसान हो जाए या रुकावट पैदा हो जाए।

اَللّٰهُمَّ إِنِّيْ أَسْتَخِيْرُكَ بِعِلْمِكَ وَأَسْتَقْدِرُكَ

بِقُدْرَتِكَ وَأَسْئَلُكَ مِنْ فَضْلِكَ الْعَظِيْمِ فَإِنَّكَ

تَقْدِرُ وَلَا أَقْدِرُ وَتَعْلَمُ وَلَا أَعْلَمُ وَأَنْتَ عَلَّامُ

الْغُيُوْبِ ط اَللّٰهُمَّ إِنْ كُنْتَ تَعْلَمُ أَنَّ

هٰذَا الْأَمْرَ خَيْرٌ لِّيْ فِيْ دِيْنِيْ وَمَعَاشِيْ وَعَاقِبَةِ

أَمْرِيْ فَاقْدِرْهُ لِيْ وَيَسِّرْهُ لِيْ ثُمَّ بَارِكْ لِيْ

فِيْهِ وَإِنْ كُنْتَ تَعْلَمُ أَنَّ هٰذَا الْأَمْرَ

شَرٌّ لِّيْ فِيْ دِيْنِيْ وَمَعَاشِيْ وَعَاقِبَةِ أَمْرِيْ

فَاصْرِفْهُ عَنِّيْ وَاصْرِفْنِيْ عَنْهُ وَاقْدِرْ لِيَ الْخَيْرَ

حَيْثُ كَانَ ثُمَّ أَرْضِنِيْ بِهٖ

अल्लाहुम्म इन्नी अस्तखीरुक बिइल्मिक
व अस्तकदिरुक बिकुदरतिक व अस्अलुक
मिन फज़्लिकल अज़ीमि फइन्नक तकदिरु
व ला अकदिरु व तअ्लमु वला अअ्लमु
व अन्त अल्लामुल गुयूबि, अल्लाहुम्म इन
कुन्त तअ्लमु अन्न हाज़ल अम्र खैरुल ली
फी दीनी व मआशी व आकिबति अम्री
फक्दिरहु ली व यस्सिरहु ली सुम्म बारिक
ली फीहि व इन कुन्त तअ्लमु अन्न
हाज़ल अम्र शर्रुल ली फी दीनी व मआशी
व आकिबति अम्री फस्रिफ्हु अन्नी
वस्रिफ्नी अन्हु वक्दिर लियल खैर हैसु
कान सुम्म अर्ज़िनी बिही

तर्जमा : ऐ अल्लाह ! मैं तेरे इल्म के ज़रीये तुझ से भलाई माँगता हूँ, और तेरी कुदरत के ज़रीये तुझ से कुदरत तलब करता हूँ और तेरे अज़ीम फज्ल का तुझ से सवाल करता हूँ, इस लिये के तू (हर काम की) कुदरत रखता है और मैं (किसी भी काम की) कुदरत नहीं रखता और तू (सब कुछ) जानता है और मैं (कुछ) नहीं जानता, और तू ही तमाम छुपी हुई (बातों) को अच्छी तरह जानने वाला है। ऐ अल्लाह ! अगर तेरे इल्म में मेरे लिये यह काम मेरे दीन और दुनिया और मेरे काम के अन्जाम में बेहतर है तो उस को मेरे लिये मुकद्दर फर्मा और उस को मेरे लिये आसान कर दे, फिर मेरे लिये उस में बरकत अता फर्मा और अगर तेरे इल्म में मेरे लिये यह काम मेरे दीन और दुनिया और मेरे काम के अन्जाम में बुरा है तो उस को मुझ से और मुझ को उस से दूर फर्मा और मेरे लिये भलाई मुकद्दर फर्मा, जहाँ कहीं भी हो, फ़िर उस पर मुझे राज़ी फर्मा।